संस्थान समाचार

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी) संस्था और उसके केंद्रों की समाचार पत्रिका

■ प्रकाशन : वर्ष : 12 ■ अंक : 78 ■ फरवरी 2026

इस अंक में

अमरकांत जन्मशती पर साहित्य जगत का नमन

(पृष्ठ 2 पर)

भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम

(पृष्ठ 3 पर)

पाणिनि व्याख्यानमाला का आयोजन

(पृष्ठ 4 पर)

के. हि. सं. द्वारा लेह में नवीकरण कार्यक्रम आयोजित

(पृष्ठ 5 पर)

दक्षिण भारतीय साहित्योत्सव

(पृष्ठ 5 पर)

"पुस्तकालय व्यवस्था का आधुनिक चरण है एआई": महामहिम

इंडियन लाइब्रेरी एसोसिएशन (ILA) तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 5 फरवरी से 7 फरवरी 2026 तक संस्थान के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में था 'AI युग में पुस्तकालय सेवाओं में बदलावः पुस्तकालय सेवाएँ, उपयोगकर्ता जुड़ाव और सामुदायिक प्रभाव' विषय पर आईएलए के 71वें वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान के महामहिम राज्यपाल श्री हरिभाउ किशनराव बागडे, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के माननीय उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे, संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी, भारतीय पुस्तकालय संघ के अध्यक्ष डॉ. प्रदीप राय, जनरल सेक्रेटरी डॉ. धरम कुमार, बीज वक्ता डॉ. डी.वी. सिंह, सम्मेलन के आयोजन सचिव डॉ. निरंजन सिंह, सम्मेलन निदेशक डॉ. ओ.एन.चोबे प्रो. जे. एन. गौतम, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, प्रो. शैलेन्द्र कुमार, ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड, डॉ. पी.पी. रावत, लखनऊ आदि अनेक विद्वान, गणमान्य सदस्य, प्रतिभागी, शैक्षिक समन्वयक, संस्थान के समस्त विभागाध्यक्ष, शैक्षिक सदस्य एवं प्रशासन के सदस्यों तथा प्रतिभागियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय राज्यपाल महोदय ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में पुस्तकालय सेवाएँ पारंपरिक संग्रह केंद्र से आगे बढ़कर डिजिटल ज्ञान, त्वरित सूचना-प्राप्ति और स्मार्ट उपयोगकर्ता सेवाओं का केंद्र बनती जा रही हैं। इसके माध्यम से पुस्तकालय न केवल उपयोगकर्ताओं की भागीदारी बढ़ा रहे हैं, बल्कि समुदाय के ज्ञान-विस्तार और डिजिटल सशक्तिकरण का आधुनिक चरण है।

माननीय राज्यपाल महोदय द्वारा उदघाटन सत्र में "केंद्रीय हिंदी संस्थान ज्ञान कोश" इंस्टीट्यूशनल डिजिटल रिपोजिटरी का शुभारंभ किया गया। इस रिपोजिटरी में संस्थान के प्रकाशनों एवं लघु शोध प्रबंधों को डिजिटल फॉर्म में रूपांतरित एवं संरक्षित किया गया है, हम अपनी आवश्यकतानुसार वर्ष, पत्रिका/पुस्तक के नाम, विषय, लेखक, बीज शब्द, शीर्षक आदि से अपनी वांछित जानकारी को खोज सकते हैं, इसे डाउनलोड करने के साथ-साथ तथा प्रिंट भी ले सकते हैं।

उक्त सम्मेलन में ऑफ लाइन तथा ऑनलाइन सत्रों में भारत एवं अन्य देशों के प्रतिभागियों ने अपने लेख का वाचन एवं प्रस्तुत किए गए जिनमें ए.आई और मशीन लर्निंग को एकीकृत करने वाली नवीन पुस्तकालय सेवाओं से लेकर व्यक्तिगत अनुभवों और गेमिफिकेशन के माध्यम से उपयोगकर्ता जुड़ाव को बढ़ाने की रणनीतियों जैसे विभिन्न विषयों को शामिल किया गया।

लगभग 210 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया। समापन सत्र में भारतीय पुस्तकालय संघ द्वारा संस्थान के निदेशक महोदय को सम्मानित भी किया गया। अतिथियों का स्वागत वकतव्य आयोजन सचिव डॉ. निरंजन सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा प्रस्तुत किया गया, संचालन डॉ. पुरुषोत्तम पाटिल तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अंकुश औंधकर, कुलसचिव द्वारा दिया गया।

अमरकांत जन्मशती पर साहित्य जगत का नमन

दिनांक 15 फरवरी 2026 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के मुख्यालय स्थित अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार, आगरा में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में सुप्रसिद्ध कथाकार अमरकांत की जन्मशती के अवसर पर "अमरकांत जन्मशती संगोष्ठी" का भव्य आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का उद्देश्य हिंदी साहित्य में अमरकांत के योगदान, उनकी कथाभूमि तथा समकालीन संदर्भों में उनकी प्रासंगिकता पर गंभीर विचार-विमर्श करना था। कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों से आए साहित्यकारों, शिक्षाविदों, शोधार्थियों तथा विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. सुरेन्द्र दुबे, माननीय उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल ने की। मुख्य अतिथियों के रूप में प्रो. माधव कौशिक, अध्यक्ष, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली; प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा तथा प्रो. नंदकिशोर पाण्डेय, कुलपति, हरिदेव जोशी पत्रकारिता और जनसंचार विश्वविद्यालय, जयपुर उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. सुरेन्द्र दुबे ने कहा कि अमरकांत हिंदी कथा साहित्य के ऐसे सशक्त रचनाकार हैं, जिन्होंने समाज के सामान्य जनजीवन, विशेषकर निम्न और मध्यम वर्ग की समस्याओं, संघर्षों और भावनाओं को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया। उन्होंने कहा कि अमरकांत की रचनाएँ आज भी समाज की वास्तविकताओं को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

मुख्य अतिथि प्रो. माधव कौशिक ने अपने वक्तव्य में अमरकांत के साहित्यिक योगदान को रेखांकित करते हुए कहा कि उनकी कहानियाँ मानवीय संवेदनाओं की गहराई को छूती हैं। उन्होंने बताया कि अमरकांत ने हिंदी कथा साहित्य को यथार्थवादी दृष्टि प्रदान की और साधारण मनुष्य के जीवन संघर्षों को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया।

उनके अनुसार, अमरकांत की रचनाएँ आज के समय में भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे सामाजिक विषमताओं, मानवीय संबंधों और जीवन की जटिलताओं को सशक्त रूप से उजागर करती हैं।

इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी ने कहा कि अमरकांत की कहानियाँ हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। उन्होंने कहा कि संस्थान द्वारा इस प्रकार की संगोष्ठियों का आयोजन साहित्यिक परंपरा को सुदृढ़ करने तथा नई पीढ़ी को हिंदी साहित्य के महान रचनाकारों से परिचित कराने के उद्देश्य से किया जाता है। उन्होंने विद्यार्थियों और शोधार्थियों को अमरकांत के साहित्य का गंभीर अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया।

विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. नंदकिशोर पाण्डेय ने अमरकांत की कहानियों में सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं के गहरे चित्रण पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अमरकांत की रचनाओं में भारतीय समाज की जटिलताओं, संघर्षों और मानवीय मूल्यों का सजीव चित्रण मिलता है। उनकी कथाएँ केवल साहित्यिक रचनाएँ ही नहीं, बल्कि समाज के यथार्थ का दस्तावेज भी हैं।

संगोष्ठी के दौरान विभिन्न विद्वानों और शोधार्थियों ने भी अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए, जिनमें अमरकांत के कथा साहित्य की विशेषताओं, उनकी भाषा-शैली, सामाजिक सरोकारों और साहित्यिक योगदान पर विस्तार से चर्चा की गई। वक्ताओं ने अमरकांत की प्रसिद्ध कहानियों और उपन्यासों का उल्लेख करते हुए उनकी रचनात्मक दृष्टि का विश्लेषण किया।

कार्यक्रम में प्राध्यापक, शोधार्थी, विद्यार्थी तथा साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे। संगोष्ठी के अंत में आयोजकों ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा इस प्रकार के साहित्यिक आयोजनों के माध्यम से हिंदी साहित्य की समृद्ध परंपरा को आगे बढ़ाने का संकल्प व्यक्त किया।

सर्वांगीण विकास के लिए जरूरी हैं सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ

दिनांक 12 तथा 13 फरवरी 2026 को केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा दो दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के निदेशक, कुलसचिव, पुस्तकालय अध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग के विभागाध्यक्ष द्वारा माँ सरस्वती को माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन के साथ किया गया।

इसके पश्चात निदेशक महोदय ने सभी प्रतिभागियों के प्रयासों की सराहना करते हुए उनका उत्साहवर्धन किया और सभी को शुभकामनाएँ देते हुए कला को अपने जीवन में सर्वांगीण विकास के लिए जरूरी बताया।

उन्होंने यह भी कहा कि यह कलाएँ मानसिक उन्नयन और शांति के लिए भी उतनी ही आवश्यक हैं जितनी अपने शरीर के विकास के लिए।

प्रतियोगिता के प्रथम दिन का मुख्य आकर्षण एकल हिंदी नृत्य रहा। इसके साथ ही हिंदी एकल गीत, एकल तबला वादन, स्वदेशी एकल गीत, स्वदेशी एकल नृत्य, हिंदी एकल नृत्य, फैंसी ड्रेस तथा रंगोली का आयोजन भी किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए निर्णायक के रूप में श्री पुंडरीकाक्षदेव पाठक एवं डॉ शैलजा मिश्रा उपस्थित रहे।

सांस्कृतिक प्रतियोगिता के द्वितीय दिवस में स्वदेशी समूह नृत्य, स्वदेशी समूह गीत, हिंदी सामूहिक नृत्य, हिंदी सामूहिक गीत का आयोजन किया गया। द्वितीय दिवस में निर्णायक मंडल के रूप में श्रीमती एकता जैन तथा श्रीमती रोशनी गिदवानी उपस्थित रहे।

संवेदनाओं के प्रसार में सहायक है हिंदी

नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा दिनांक 03.02.2026 से 20.02.2026 तक जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डाइट, गेजिंग, सिक्किम के डी.एल.एड. पाठ्यक्रम के 50 प्रशिक्षणार्थियों हेतु हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम संचालित किया गया। पाठ्यक्रम का उद्घाटन महाराष्ट्र से पधारे विशिष्ट अतिथि डॉ. गणेश कुलकर्णी के करकमलों द्वारा सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर किया गया। उन्होंने कहा कि, "भाषा दिल की बात को पहुँचाने का सशक्त माध्यम है। जो भी सीखो दिल से सीखो, जो भी करो दिल से करो, जो भी निभाओ दिल से निभाओ।'' उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, ने अपने अध्यक्षीय उदबोधन में कहा कि, 'हर भाषा का अपना महत्व है और उसकी सीमाएँ भी हैं। हिंदी स्थानीय लोगों से जोड़ने में सहायक होती है। अपने अनुभव, संवेदनाओं को राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने में हिंदी सहायक होती है।' नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग की विभागाध्यक्ष एवं पाठ्यक्रम संयोजक प्रो. सपना गुप्ता ने प्रशिक्षण में हिंदी संबंधित प्राप्त होने वाले ज्ञान के बारे में जानकारी प्रेषित करते हुए कहा कि, 'यहाँ पर आए प्रशिक्षणार्थी अपने राज्य में कक्षा में पढ़ाने के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। नेपाली और हिंदी की लिपि देवनागरी है, बस बोलने एवं व्याकरण का अंतर है। जिस उद्देश्य को लेकर आए हैं उस उद्देश्य की पूर्ति आवश्यक है।' जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, गेजिंग, गंगटोक, सिक्किम से पधारी व्याख्याता सुश्री ओंगमुला भूटिया एवं सुश्री मैग्डोलिन कार्थक, अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी की गरिमामयी उपस्थिति रही। दो प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अभिमत अनुभव प्रेषित किए गए। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान द्वारा किया गया।

पाठ्यक्रम में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी द्वारा हिंदी भाषा एवं साहित्य का परिचय, शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर द्वारा हिंदी भाषा की संरचना एवं भाषा तुलना प्रविधि, अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी द्वारा भाषा विज्ञान पर विशेष व्याख्यान दिए गए। प्रो. सपना गुप्ता द्वारा शैक्षिक अध्ययन की कक्षाएँ ली गई। डॉ. मीनाक्षी दुबे द्वारा हिंदी भाषा एवं साहित्य का परिचय की कक्षाएँ ली गईं। डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा अन्य भाषा हिंदी शिक्षण और हिंदी भाषा परिमार्जन की कक्षाएँ ली गई। डॉ. अनामिका गुप्ता द्वारा हिंदी भाषा की संरचना एवं भाषा तुलना प्रविधि एवं भाषा विज्ञान की कक्षाएँ ली गई। प्रशिक्षणार्थियों ने अवकाश दिवसों में आगरा, दिल्ली, जयपुर के स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों का शैक्षिक संदर्शन किया।

'भारतीय भाषाओं के भक्ति साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक समरसताः तुलनात्मक अध्ययन' त्रि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में 19 फरवरी को प्रशिक्षणार्थियों ने राई, लैपचा, भूटिया, नेपाली, आदि सांस्कृतिक नृत्य एवं गीत प्रस्तुतियाँ दीं। पर-परिक्षण में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों को 20 फरवरी को विभागीय स्तर पर प्रो. सपना गुप्ता द्वारा पुरस्कृत किया गया।

संपादकीय

सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय : एआई की पुनर्परिभाषा

प्रिय पाठकों,

21वीं सदी में वैश्विक विकास का स्वरूप तीव्र गति से बदल रहा है। डिजिटल तकनीक, डेटा और नवाचार आज किसी भी देश की प्रगति के प्रमुख आधार बन चुके हैं। इन परिवर्तनों के केंद्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) एक ऐसी तकनीक के रूप में उभर रही है जो न केवल उद्योग और अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर रही है बल्कि शासन, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक संरचना को भी नया स्वरूप प्रदान कर रही है। डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया जैसी पहल ने तकनीकी नवाचार और उद्यमिता को प्रोत्साहित किया है। इसी क्रम में अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता को भारत की भविष्य की विकास रणनीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ माना जा रहा है।

हाल ही में आयोजित 'एआई इम्पैक्ट समिट 2026' में विभिन्न देशों के नीति निर्माताओं, तकनीकी विशेषज्ञों और उद्योग जगत के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और एआई के संवेदनात्मक तथा उत्तरदायी उपयोग पर व्यापक चर्चा की। इस मंच ने यह स्पष्ट किया कि भारत एआई के विकास को केवल आर्थिक लाभ के दृष्टिकोण से नहीं बल्कि सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ाना चाहता है। अंतरराष्ट्रीय लाइब्रेरी एसोसियशन का सम्मेलन हो या आईआईटी कानपुर की शोध परियोजना, गत माह केंद्रीय हिंदी संस्थान के विभिन्न केंद्रों तथा विभागीय गतिविधियों में भी मूल विषय के रूप में एआई की छाप स्पष्ट दिखी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह विशाल मात्रा में उपलब्ध डेटा का विश्लेषण करके ऐसे निष्कर्ष प्रस्तुत कर सकती है, जिन्हें पारंपरिक तरीकों से समझना कठिन होता है। भारत जैसे विशाल जनसंख्या और तेजी से बढ़ते डेटा वाले देश में एआई का उपयोग नीति निर्माण और विकास योजनाओं के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। कृषि क्षेत्र में एआई आधारित तकनीकों के माध्यम से मौसम की सटीक भविष्यवाणी, फसल रोगों की पहचान और उत्पादकता बढ़ाने के उपायों का पता लगाया जा सकता है, जिससे किसानों की आय में वृद्धि और कृषि क्षेत्र की स्थिरता सुनिश्चित करने में सहायता मिलती है। इसी प्रकार स्वास्थ्य क्षेत्र में भी एआई क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है, क्योंकि एआई आधारित प्रणालियाँ रोगों के प्रारंभिक निदान, चिकित्सा डेटा के विश्लेषण और उपचार की योजना बनाने में सहायक होती हैं, वहीं टेलीमेडिसिन और डिजिटल स्वास्थ्य प्लेटफॉर्म दूरदराज़ के क्षेत्रों तक बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में एआई व्यक्तिगत सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करते हुए छात्रों की क्षमता और रुचि के अनुसार शिक्षा प्रदान करने में सहायक है, जिससे डिजिटल प्लेटफॉर्म और एआई आधारित शिक्षण उपकरण शिक्षा को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाते हैं, विशेष रूप से ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए। इसके अतिरिक्त शासन व्यवस्था में भी एआई की महत्वपूर्ण भूमिका उभर रही है, जहाँ डेटा आधारित निर्णय प्रणाली के माध्यम से प्रशासन अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और प्रभावी बन सकता है तथा नागरिक सेवाओं के डिजिटलीकरण और एआई आधारित विश्लेषण से सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में सुधार संभव है। साथ ही भारत के तेजी से विकसित हो रहे स्टार्टअप और नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र में भी एआई महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है जहाँ अनेक भारतीय स्टार्टअप स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा और वित्तीय सेवाओं के क्षेत्र में एआई आधारित समाधान विकसित कर रहे हैं जिससे न केवल तकनीकी विकास को बढ़ावा मिल रहा है बल्कि रोजगार के नए अवसर भी सृजित हो रहे हैं।

हालाँकि एआई के विकास के साथ कुछ चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। रोजगार पर संभावित प्रभाव, डेटा गोपनीयता, साइबर सुरक्षा और तकनीक के दुरुपयोग की आशंका जैसे प्रश्न गंभीर चिंता के विषय हैं। यदि इन चुनौतियों का समाधान उचित नीतियों और नियमों के माध्यम से नहीं किया गया तो एआई के लाभ सीमित रह सकते हैं। इसलिए आवश्यक है कि एआई के विकास के साथ-साथ उसके लिए एक मजबूत नीति ढांचा भी विकसित किया जाए जिसमें नैतिकता और पारदर्शिता को प्राथमिकता दी जाए।

आज एआई के क्षेत्र में कौशल विकास भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री ने सम्मेलन के दौरान संवेदना और उत्तरदायित्व को सर्वोपरि मूल्य माना। भारत की विशाल युवा आबादी को यदि एआई और डिजिटल तकनीकों के क्षेत्र में उन मूल्यों का अनुसरण करते हुए प्रशिक्षित किया जाए तो यह देश की सबसे बड़ी ताकत बन सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति और विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रम इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। केंद्रीय हिंदी संस्थान भी विभिन्न स्तरों पर इस दिशा में निरंतर प्रयासरत है जिससे कि देश का युवा मूल्य आधारित कौशल से प्रशिक्षण ग्रहण कर देश के निर्माण में सहायक हो सके।

अथ, भारत आज एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ तकनीक, नवाचार और मानव संसाधन का अद्वितीय संयोजन उपलब्ध है। यदि इन संसाधनों का मूल्य आधारित उपयोग किया जाए तो एआई भारत की विकास यात्रा को वास्तव में "पुनर्परिभाषित" कर सकती है। यह केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं होगा बल्कि एक ऐसी नई विकास कथा होगी जिसमें विज्ञान, मानवता और समावेशी प्रगति का संतुलित समन्वय दिखाई देगा।

निदेशक,
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी 'देशगव्हाणकर'

'हिंदी के माध्यम से भारत-यूरोप संवाद'

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अनुसंधान एवं भाषा-विकास विभाग द्वारा 27 फरवरी 2026 को 'पाणिनि व्याख्यानमाला' के छठे व्याख्यान का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ संस्थान के शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर, नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग की अध्यक्ष प्रो. सपना गुप्ता तथा आमंत्रित वक्ता श्री राहुल खटे द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं माँ सरस्वती के माल्यार्पण के साथ हुआ।

इस अवसर पर प्रो. सपना गुप्ता ने व्याख्यान के विषय की आधारशिला रखते हुए भारत और यूरोप के ऐतिहासिक संबंधों तथा भारतीय भाषाओं के आपसी अंतर्संबंधों पर विस्तार से चर्चा की। वहीं, प्रो. हरि शंकर ने इस विषय को समसामयिक रूप से महत्वपूर्ण बताते हुए विद्यार्थियों के लिए इसे अत्यंत लाभदायक और ज्ञानवर्धक बताया।व्याख्यान के मुख्य वक्ता नांदेड़ से पधारे राजभाषा अधिकारी श्री राहुल खटे ने 'हिंदी के माध्यम से भारत-यूरोप संवाद' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने संबोधन में संस्कृत और हिंदी की वैश्विक महत्ता को रेखांकित करते हुए बताया कि किस प्रकार यह भाषा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संवाद का एक सशक्त माध्यम बनकर उभर रही है। उन्होंने यूरोपीय भाषाओं के शब्दों का एक व्युत्पत्तिपरक अध्ययन प्रस्तुत किया और उसके महत्व के बारे में बताया। इसके अलावा उन्होंने कई ऑनलाइन टूल्स के बारे में बताया।

इस महत्वपूर्ण शैक्षणिक कार्यक्रम में संस्थान के सभी विभागों के विभागाध्यक्ष प्रो. चंद्रकांत कोठे, डॉ. जोगेंद्र सिंह मीणा, डॉ. मिनाक्षी दुबे एवं शैक्षिक सदस्य और अध्ययनरत विद्यार्थी उपस्थित रहे जिन्होंने इस सार्थक व्याख्यान का लाभ उठाया। ▢

लोक साहित्य कोशों की कार्यशालाएँ

'लेवा लोक साहित्य' की सामग्री चयन, संकलन, व्यवस्थापन करने हेतु द्वितीय कार्यशाला दिनांक 02.02.2026 से 04.02.2026 तक आपके कार्यक्षेत्र मूलजी जेठा महाविद्यालय, जलगांव, महाराष्ट्र में निम्नलिखित विद्वानों / विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई। इस कार्यशाला में प्रो. अरुण कुमार भागवत पाटील, (भाषा संपादक) जलगांव, प्रो विजय लोहार, जलगांव महाराष्ट्र (हिंदी संपादक), श्री. नि. रा. पाटील, लेवाबाली कोश निर्माता, डोंबिवली, श्री प्रभात चौधरी, अध्ययनकर्ता, लेवा बोली, जलगांव, डॉ मालती जावले, भुसावल, ने भाग लिया।

'आपातानी लोक साहित्य' की सामग्री चयन, संकलन करने हेतु प्रथम कार्यशाला दिनांक 13.02.2026 से 15.02.2026 तक अपने कार्यक्षेत्र राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बन्दरदेवा, अरुणाचल प्रदेश में निम्नलिखित विद्वानों/विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई।

इस कार्यशाला में कागो मादो, स्नातक प्रशिक्षित शिक्षक, श्री ग्याति राणा, आपातानी कार्यक्रम एवं सांस्कृतिक लेखक, श्री पुरा पाई न्यिबू परपरांगात' पुजारी, श्री डीलियांग ताडह, सांस्कृतिक शोधार्थी / लेखक, सुश्री नानी याना, छात्रा, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, दोईमुख, ने भाग लिया।

हिंदी कच्छी अध्येता कोश निर्माण संबंधी द्वितीय कार्यशाला दिनांक 23.02.2026 से 26.02.2026 तक क्रान्ति गुरू श्यामजी कृष्ण वर्मा कच्छ भुज (के.एस. के. वी.) गुजरात में निम्नलिखित विषय-विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई।

इस कार्यशाला में प्रो. दीपेद्र सिंह जाडेजा, हिंदी विभाग, बडौदा वि. वि गुजरात (हिंदी विशेषज्ञ), प्रो. कश्मीरा परेश मेहता, अंग्रेजी विभाग, ब्लाक डी के. एस. के. वी विश्वविद्यालय, भुज-कच्छ, गुजरात (कच्छी विशेषज्ञ), प्रो. लालजी मेवाड़ा 'स्वापन', 33 श्री बलराम अर्पामेंट जुबली सर्कल बैंकर्स कॉलोनी भुज, कच्छ, गुजरात (कच्छी विशेषज्ञ), डॉ. विनोद मालशी कटुवा, प्रभारी, आचार्य दाड़ा, दुश्याल कॉलेज, ऑफ ऐजुकेशन वार्ड / ए मैत्री विद्यालय कैंपस, गुजरात (कच्छी विशेषज्ञ) डॉ. सागर देसले, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, श्री गोविंद गुरू विश्वविद्यालय, विंजोल, गुजरात (कच्छी विशेषज्ञ) ने भाग लिया।

हिंदी-बघेली अध्येता कोश निर्माण संबंधी द्वितीय कार्यशाला दिनांक 23.02.2026 से 27.02.2026 तक केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (मुख्यालय) में निम्नलिखित विषय विशेषज्ञों आयोजित की गई। इस कार्यशाला में डॉ. श्रीनिवास शुक्ल सरस, सीधी, म. प्र. (संयोजक), श्री राजबहोर पाठक, मनोज पतुलखी, सीधी, म. प्र.. श्री ब्रजमोहन योगी ब्रजेश, सीधी, श्री रमाकान्त द्विवेदी सावन, बमुरी म. प्र., अंजनी सिंह सौरभ, सीधी, म. प्र., ने भाग लिया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के अवसर पर निदेशक महोदय द्वारा हिंदी-बघेली अध्येता कोश निर्माण संबंधी तथा हिंदी-पंजाबी मुहावरा कोश निर्माण संबंधी आधरित विषयों तथा महत्व पर प्रकाश डाला।

हिंदी-पंजाबी मुहावरा कोश निर्माण संबंधी प्रथम कार्यशाला दिनांक 24.02.2026 से 27.02.2026 तक केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (मुख्यालय) में निम्नलिखित विषय विशेषज्ञों को आयोजित की गई। इस कार्यशाला में डॉ. सुखदेव सिंह मिन्हास, चंडीगढ़, डॉ. धर्मपाल साहिल, होशियारपुर, डॉ. मलकीयत सिंह, सैन्ट्रल यूनिवर्सिटी हिमाचल प्रदेश, डॉ. नरेश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, हिमाचल प्रदेश डॉ. रजनी, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला ने भाग लिया। समापन सत्र के अवसर पर प्रो. हरिशंकर शैक्षिक समन्वयक, प्रो. सपना गप्ता, विभागाध्यक्ष नवीकरण भाषा एवं प्रसार विभाग उपस्थित रही। विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे के संयोजन में कार्यशाला संपन्न की गई। कार्यशाला में सहभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। ▢

ए.आई. मॉड्यूल पर आधारित होगी शोध परियोजना

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अनुसंधान एवं भाषा-विकास विभाग द्वारा दिनांक 24/02/2025 को नजीर सभागार में आई.आई.टी. कानपुर द्वारा वित्त पोषित शोध परियोजना 'रोल ऑफ़ ए आई इन मेंटल हेल्थ एंड इंक्लूजन इन हॉयर एकेडमिक इंस्टीट्यूशन' के शुरुआत हेतु बैठक आयोजित हुई। जिसकी अध्यक्षता संस्थान के निदेशक प्रोफेसर सुनील बाबुराव कुलकर्णी ने की।

उन्होंने कहा कि यह परियोजना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह उच्च शिक्षा से जुड़ी हुई है, जो छात्रों में करियर के अवसरों और व्यक्तिगत विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है। इसमें अलग-अलग सामाजिक एवं भाषिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों से डाटा संकलित किया जाएगा।

यह विद्यार्थियों के लिए भी एक रोचक तथा महत्त्वपूर्ण अनुभव रहेगा। इस बैठक के संयोजक तथा परियोजना के मार्गदर्शक तथा अनुसंधान एवं भाषा-विकास के अध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी ने इस परियोजना के उद्देश्य और स्वरूप की आधारशिला रखते हुए इस परियोजना के वैश्विक महत्त्व को रेखांकित करते हुए बताया कि इसका उद्देश्य मुख्य रूप से छात्रों पर केंद्रित है, जिसके आधार पर ए.आई. मॉड्यूल का विकास होगा।

आज ए.आई. से जुड़े कई प्रकार के शोध हो रहे हैं, जिसमें सहयोगी बनने का महत्त्वपूर्ण तथा सुनहरा अवसर संस्थान को मिला है।

इस बैठक में सानिध्य के रूप में अध्यापक शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो. चंद्रकात कोठे रहे। उन्होंने कहा कि यह शोध परियोजना छात्रों के लिए महत्त्वपूर्ण है। जिसमें छात्रों को भाग लेना चाहिए और शोध के लिए बनी टीम का सहयोग करना चाहिए। अंत में डॉ. अवनीश कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। ▢

दिल्ली केंद्र

दूरस्थ प्रदेशों में आवश्यक है हिंदी प्रशिक्षण

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के दिल्ली केंद्र द्वारा 17 से 28 फरवरी 2026 को डाइट लेह लद्दाख में हिंदी अध्यापकों के लिए नवीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए केंद्रीय हिंदी संस्थान के माननीय निदेशक प्रो. सुनील बाबूराव कुलकर्णी ने अपने ऑनलाइन उद्बोधन में कहा कि ऐसे दूरस्थ प्रदेशों में हिंदी के लिए भौतिक रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कर पाना केंद्रीय हिंदी संस्थान के लिए अत्यंत सौभाग्य की बात है। आप सभी ने सहभागिता करके हमारे इस आयोजन को सार्थकता प्रदान की है।

इस कार्यक्रम में 75 से अधिक प्रतिभागियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. धनजी प्रसाद, (प्रोफेसर दिल्ली केंद्र) द्वारा किया गया। नवीकरण कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र 17 फरवरी 2026 को प्रातः 10:00 बजे से आयोजित किया गया जिसमें डाइट लेह के खाते प्रधानाचार्य मिर्जा मेहदी और विभागाध्यक्ष डॉ. सेरिंग यंगडोल की उपस्थिति रही।

नवीकरण पाठ्यक्रम

उद्घाटन सत्र में अपने संबोधन में कार्यक्रम संयोजक डॉ. धनजी प्रसाद ने कहा कि मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से न केवल आप लोग हिंदी के नवीनतम पक्षों को सीख पाएँगे, बल्कि व्यावहारिक कठिनाइयों का भी इस कार्यक्रम में निराकरण किया जाएगा। संपूर्ण कार्यक्रम के दौरान प्रो. धनजी प्रसाद के साथ दो स्थानीय अतिथि अध्यापकों डॉ. सेरिंग छोरोल तथा डॉ. सेरिंग डोलकर द्वारा भी अध्यापन कार्य किया गया। इस दौरान प्रतिभागियों को हिंदी भाषा की संरचना (ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य एवं अर्थ) हिंदी भाषा का ऐतिहासिक परिदृश्य, मानक लिपि, हिंदी का मानक स्वरूप ,हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, साहित्य विश्लेषण, अनुवाद, भाषा शिक्षण, हिंदी और प्रौद्योगिकी, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में हिंदी आदि विषयों से संबंधित विविध व्याख्यान दिए गए।

कार्यक्रम का समापन 28 फरवरी 2026 को आयोजित किया गया, जिसमें लेह लद्दाख की मुख्य शिक्षा अधिकारी देलदन अंगमो मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुईं। उन्होंने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रशासन की ओर से आयोजित किए जाने वाले सभी कार्यक्रम आपके कौशल में अभिवृद्धि करते हैं। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस कार्यक्रम से आपके हिंदी कौशल में पर्याप्त विकास हुआ होगा और आप इसे लेकर अपने विद्यालय तक जाएँगे। समापन सत्र में प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिपुष्टि (फीडबैक) में कहा कि लेह लद्दाख और जम्मू कश्मीर जैसे दूरस्थ इलाकों में अंग्रेजी के विविध कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं, किंतु हिंदी के प्रशिक्षण कार्यक्रम बहुत कम आयोजित होते हैं।

लेह लद्दाख के केंद्र शासित प्रदेश बनने के पश्चात यहाँ पर लोगों की हिंदी अभिरुचि में वृद्धि हुई है। साथ ही हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। इसलिए इस प्रकार के कार्यक्रमों की महती आवश्यकता है। कार्यक्रम संयोजक डॉ. सेरिंग यंगडोल ने भी इस बात पर बल दिया कि अधिक से अधिक अध्यापकों को ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहभागिता करनी चाहिए तथा जो भी ज्ञान अर्जित कर सकें, उन्हें अधिक से अधिक छात्रों तक पहुँचाना चाहिए।

अंत में दिल्ली केंद्र की ओर से कार्यक्रम संयोजक डॉ. धनजी प्रसाद ने सभी प्रतिभागियों और आयोजकों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण जी की जयंती

दिनांक 02 फरवरी, 2026 को केंद्र पर संस्थान के संस्थापक पद्मभूषण मोटूरि सत्यतनारायण जी का जन्मदिन मनाया गया। इस अवसर पर केंद्र के सभी शैक्षिक तथा प्रशासनिक सदस्य उपस्थित रहे।

शैक्षिक परिभ्रमण

दिनांक 06 फरवरी, 2026 को अंतरराष्ट्रीवय हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम के विदेशी विद्यार्थियों हेतु सूरजकुंड मेले का परिभ्रमण किया गया है। उक्त परिभ्रमण में सभी विद्यार्थियों को देश की रंग-बिरंगी संस्कृहति से अवगत कराया गया।

मातृभाषा दिवस कार्यक्रम

दिनांक 20 फरवरी, 2026 को केंद्र पर मातृभाषा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें सभी विदेशी छात्रों और कार्मिकों ने अपने-अपनी भाषा में लोकगीत प्रस्तुत किए।

हैदराबाद केंद्र

तृतीय दक्षिण भारतीय साहित्योत्सव

दिनांक 01 फरवरी, 2026 को युवा उत्कर्ष साहित्यिक मंच (पंजीकृत न्यास) आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना राज्य शाखा तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय तृतीय दक्षिण भारतीय साहित्योत्सव 1 फरवरी 2026 (रविवार) केंद्र के सभागार में डॉ. रमा द्विवेदी (अध्यक्ष, आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना राज्य शाखा) एवं महासचिव सरिता दीक्षित तथा डॉ. फत्ताराम नायक क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान की अध्यक्षता में संपन्न हुआ जिसमें मुख्य अतिथि प्रो. ऋषभदेव शर्मा (परामर्शी, हिंदी) मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद, विशिष्ट अतिथि डॉ. राजीव सिंह 'नयन' शिक्षाविद एवं वरिष्ठ साहित्यकार एवं ओम प्रकाश

शुक्ल राष्ट्रीय महासचिव, युवा उत्कर्ष दिल्ली, सम्माननीय अतिथि प्रदीप कुमार दत्त संयुक्त सचिव, हिंदी महाविद्यालय, हैदराबाद, विवेक बादल बाजपुरी प्रभारी, उत्तराखण्ड एवं प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रमा द्विवेदी आदि मंच पर उपस्थित थे।

इस अवसर पर युवा उत्कर्ष साहित्यिक मंच (पंजीकृत न्यास) आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना राज्य शाखा की प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रमा द्विवेदी द्वारा 'गंगा में तैरते मिट्टी के दीये' काव्य संग्रह पुस्तक का मंचस्थ अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. रेखा शर्मा, सजग तिवारी, डिम्पल मिश्रा, डॉ. एस. राधा, डॉ. एस.एल. द्विवेदी, डॉ. संदीप, नवीन, एवं कई संस्थाओं के पदाधिकारी गण, नगर के गणमान्य साहित्य प्रेमी सहित लगभग 60 लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की।

पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण जी की जयंती

दिनांक 02.02.2026 को हैदराबाद केंद्र के बहुउद्देशीय कक्ष में केंद्रीय हिंदी संस्थान के संस्थापक पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण जी की जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उनका जन्म 2 फ़रवरी, 1902 को आंध्र प्रदेश में कृष्णा जिले के दोण्डपाडू नामक गाँव में हुआ था। इस अवसर पर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक ने उन्हें याद करते हुए कहा कि उनका मत था कि भाषा सार्वजनिक समाज की वस्तु है।

भारतीय बहुभाषी अनुवाद सारथी प्रशिक्षण कार्यशाला

दिनांक 26 फरवरी, 2026 को राष्ट्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम संस्थान, यूसुफगुड़ा, हैदराबाद के परिसर में भारत सरकार गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग एवं नगर राजभाषा कार्यान्वय समिति, हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में 'भारतीय बहुभाषी अनुवाद सारथी प्रशिक्षण कार्यशाला' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र की ओर से डॉ. एस. राधा, श्री शेख -मस्तान वली एवं डॉ. संदीप कुमार ने कोर कमिटी सदस्य के रूप में भाग लेकर प्रशिक्षण का लाभ उठाया।

दीमापुर केंद्र

पूर्व, पूर्वोत्तर एवं उत्तरी क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा 20 फरवरी, 2026 को इंटरनेशनल इंडोर एग्जिबिशन सेंटर अगरतला (त्रिपुरा) में पूर्व, पूर्वोत्तर एवं उत्तरी क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया।

इस महत्वपूर्ण सम्मेलन में केंद्रीय हिंदी संस्थान की ओर से डॉ. थुन्बुई, क्षेत्रीय निदेशक, दीमापुर केंद्र ने संस्थान के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में अमित शाह, माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री उपस्थित रहे।

उनके साथ मणिक साहा, माननीय मुख्यमंत्री, त्रिपुरा तथा बंडी संजय कुमार, माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री सहित अनेक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षाविद् एवं विभिन्न विभागों के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी के विकास एवं विस्तार तथा पूर्वोतर भारत में हिंदी की बढ़ती भूमिका पर गंभीर विचार-विमर्श करना था। विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग की आवश्यकता पर बल दिया।

यह भी रेखांकित किया गया कि हिंदी केवल राजभाषा ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समन्वय की सशक्त कड़ी है, विशेषकर पूर्वोतर राज्यों में इसकी स्वीकार्यता निरंतर बढ़ रही है।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

दिनांक 21 फरवरी, 2026 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के बहुउद्देशीय हाल में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरूआत में संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक एवं केंद्र के सदस्यों ने दीप प्रज्ज्वलन कर माँ शारदे के चरणों में पुष्प सुमन अर्पित किए। इस दौरान अलग-अलग राज्यों के संस्थान कर्मियों ने अपनी मातृभाषा में कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस अवसर संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक ने अपनी राजस्थानी मातृभाषा में आज के दिन की उपयोगिता एवं सरकार द्वारा सभी मातृभाषाओं के प्रोत्साहन के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए लोकगीत के साथ अपनी विचार रखे। डॉ. संदीप कुमार ने अवधी एवं भोजपुरी भाषा में प्रकाश डाला। श्री सजग तिवारी ने एवं डॉ. दीपेश व्यास ने बुंदेली बोली में लोकगीत व प्रस्तुत किए। श्री के. इंद्रा ने तेलुगु मातृभाषा में कविता प्रस्तुत की।

शिलांग केंद्र

केंद्र का संदर्शन

भारतीय प्रबंधन संस्थान, शिलांग के सह-प्रबंधक सुश्री पार्वती पींगरोप, छात्रा विदिशा सिंह एवं छात्र श्रेयांश गौतम ने केंद्रीय हिंदी संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र : शिलांग परिसर का संदर्शन दिनांक 09.02.2025 को किया। इस अवसर पर क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय ने पूर्वोत्तर केंद्रित पत्रिका 'समन्वय पूर्वोत्तर' से उनका स्वागत किया। अतिथियों ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं स्थानीय भाषाओं के लोक-साहित्यों के संकलन एवं संवर्धन में केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी प्राप्त की तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र में हिंदी भाषा के उन्नयन हेतु भारतीय प्रबंधन संस्थान के शिलांग केंद्र के सहयोग की इच्छा प्रकट की। उन्होंने इसी क्रम में क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय का साक्षात्कार लिया जिसमें क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में हिंदी भाषा के उन्नयन में संस्थान की भूमिका एवं कार्य-विस्तार से अतिथियों को अवगत कराया।

मुख्यालय आगरा के स्वामी विवेकानंद केंद्रीय पुस्तकालय एवं भारतीय ग्रंथालय संघ (ILA) के संयुक्त तत्वावधान में "कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में पुस्तकालय सेवाओं का रूपांतरण : पुस्तकालय सेवाएँ, उपयोगकर्ता सहभागिता और सामुदायिक प्रभाव" विषय पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। इस सम्मेलन का उद्घाटन महामहिम राज्य पाल श्री हरिभाऊ किसनराव बागडे, राजस्थान द्वारा किया गया।

मुख्यालय, आगरा अवस्थित नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग एवं पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित त्रि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन मुख्यालय आगरा में किया गया।

मुख्यालय आगरा अवस्थित अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्वावधान में 'अमरकांत जन्मशती संगोष्ठी' का आयोजन किया गया।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डाइट, गेजिंग, सिक्किम के डी.एल.एड. के 50 प्रशिक्षणार्थियों हेतु हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम संचालित किया गया।

मुख्यालय आगरा में राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद व केंद्रीय हिंदी संस्थान के संयुक्त तत्त्वाधान में आयोजित 'भारतीय भाषाएं एवं सिंधी भाषाः परस्पर संबंध' के विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन।

शब्दवार्ता

"मानव (M.A.N.A.V.)"

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के तीव्र विकास के इस युग में तकनीक को मानव मूल्यों के साथ जोड़ना अत्यंत आवश्यक हो गया है। इसी दृष्टि से नई दिल्ली में आयोजित 'एआई इम्पैक्ट समिट' में भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए भारत का 'मानव' (M.A.N.A.V.) विज़न" प्रस्तुत किया। इस विज़न के अनुसार एआई का विकास केवल तकनीकी प्रगति तक सीमित न रहकर मानवता के हित, नैतिकता और उत्तरदायित्व के साथ जुड़ा होना चाहिए। 'मानव' (M.A.N.A.V.) का अर्थ है (M) मोरल एंड एथिकल सिस्टम्स, (A) अकाउंटेबल गवर्नेंस, (N) नेशनल सॉवरेनिटी, (A) एक्सेसिबल एंड इन्क्लूसिव तथा (V) वैलिड एंड लेजिटिमेट। इसके अंतर्गत एआई के विकास को नैतिकता एवं आचार आधारित प्रणाली, उत्तरदायी शासन व्यवस्था, राष्ट्रीय संप्रभुता, सुलभ समावेशी तथा वैध और प्रामाणिक मूल्यों से युक्त रखने की बात कही गई है ताकि यह मानव कल्याण का साधन बन सके। साथ ही इसके उपयोग के लिए पारदर्शी नियमों और सुदृढ़ निगरानी व्यवस्था की आवश्यकता पर बल दिया गया है जिससे तकनीक के प्रति जवाबदेही सुनिश्चित की जा सके।

इस विज़न के अनुसार डेटा पर अपने वास्तविक स्वामी का अधिकार है और उसके उपयोग में राष्ट्रीय हितों तथा नागरिकों की गोपनीयता की रक्षा सर्वोपरि होनी चाहिए। एआई को कुछ सीमित संस्थाओं या व्यक्तियों का एकाधिकार न बनाकर समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए सुलभ और समावेशी बनाने पर भी विशेष बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त एआई के सभी प्रयोग कानूनसम्मत, प्रामाणिक और सत्यापित होने चाहिए ताकि इसके परिणामों पर विश्वास कायम रह सके। 21वीं सदी के एआई-प्रधान विश्व में भारत का मानव-केंद्रित तकनीकी विकास का विज़न एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

- प्रस्तुति- शिवानी चौहान

प्रकाशन विभाग

संस्थान प्रकाशनों की बिक्री से संबंधित भुगतान को ऑनलाइन स्वीकार करने की सुविधा उपलब्ध है इसके लिए पृथक से खाता खोला गया है। क्यू आर कोड के माध्यम से भी भुगतान किया जा सकता है। खाता विवरण इस प्रकार है-

Account Holder's Name:
THE KENDRIYA
HINDI SHIKSHANA MANDAL AGRA
Account Number : 42583260224
IFSC : SBIN0017686
MICR : 282002047
Branch : KHANDARI CROSSING AGRA

नोटः 1. संस्थान की प्रकाशन सूची संस्थान वेबसाईट www.hindisansthan.in पर उपलब्ध है।
2. सूची में से चयनित पुस्तकों का क्रयादेश ई-मेल publicationmanagerkhs@gmail.com पर भेजा जा सकता है।

Merchant Name :
THE KENDRIYA HINDI SHIKHSANA MANDAL
UPI ID : thekhsmagra@sbi

मन के नैराश्य को दूर कर नए उत्साह का संचार करता है भारतीय भक्ति साहित्य : डॉ. कृष्ण गोपाल

केंद्रीय हिंदी संस्थान के नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग तथा पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग द्वारा दिनांक 19-21 फरवरी 2026 को संस्थान के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में 'भक्ति साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक समरसता तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। दिनांक 19 फरवरी, 2026 को इस संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में संगोष्ठी का शुभारंभ मंचासीन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह-सरकार्यवाह आदरणीय डॉ. कृष्ण गोपाल, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मडल के उपाध्यक्ष आदरणीय आचार्य सुरेंद्र दुबे, संस्थान के निदेशक आचार्य सुनील बाबुराव कुळकर्णी, हरिदेव जोशी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, जयपुर के कुलपति आचार्य नन्द किशोर पाण्डेय तथा संगोष्ठी की संयोजक नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. सपना गुप्ता तथा पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे द्वारा सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन से हुआ। तत्पश्चात स्वदेशी एवं विदेशी विद्यार्थियों द्वारा सरस्वती वंदना एवं संस्थान गीत की सुंदर प्रस्तुति दी गई तथा निदेशक महोदय द्वारा उत्तरीय एवं स्मृति चिह्न भेंट कर मंचासीन अतिथियों का स्वागत किया गया।

प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी ने सभागार में उपस्थित समस्त सम्मानित अतिथियों एवं सदस्यों का स्वागत किया तथा यह भी बताया कि भक्ति साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना कि वह अपने चरमोत्कर्ष के समय में था। संस्थान परिचय प्रो. सपना गुप्ता द्वारा दिया गया। विषय प्रवर्तक के रूप में भक्ति साहित्य के मर्मज आचार्य नन्द किशोर पाण्डेय ने इस बात पर जोर दिया कि भक्ति साहित्य का पुनर्मूल्यांकन भारतीय दृष्टिकोण से करने पर अपने-आप मानवीय विषमता के स्थान पर समरसता प्रसारित होगी।

संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. कृष्ण गोपाल ने भक्ति साहित्य को अत्यंत मूल्यवान एवं सार्थक बताया। भारतीय भक्ति साहित्य में योगदान करने वाले लोग विभिन्न सामाजिक स्तर, कार्यक्षेत्र, भाषाई क्षेत्र, सांस्कृतिक एवं धार्मिक पृष्ठभूमि के थे और इस कारण से यह साहित्य विश्व में अद्वितीय है। भक्ति साहित्य में महिलाओं ने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया और जितनी महिलाओं ने इस साहित्य में योगदान दिया उतना पूरे विश्व की महिलाओं ने मिलकर भी साहित्य सृजन नहीं किया। भक्ति मन के नैराश्य को दूर कर नए उत्साह का संचार करती है। प्रो. सुरेन्द्र दुबे ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि भक्ति साहित्य का समग्रता में अध्ययन होना चाहिए। नानक, कबीर, चैतन्य, नामदेव, मीराबाई सब में एक ही तत्व है। संतों की रचनाएँ हमें संसार सागर से मुक्ति देती हैं। भक्ति विविधता को मिटाती है। भारत भक्ति साहित्य को लेकर चलेगा तो अवश्य विश्वगुरु बनेगा।

इस उद्घाटन सत्र में दो पुस्तकों का विमोचन भी किया गया जो कि एक तमिल समूह और दूसरी अवधी समूह से थी। संगोष्ठी का संचालन डॉ. गोपेश्वर दत पांडेय ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मीनाक्षी दुबे ने किया। कुल 6 सत्रों में लगभग 93 विद्वानों द्वारा अपने विचार प्रस्तुत रखे गए।

प्रथम सत्र में ब्रज, असमिया, मणिपुरी भाषा समूह से संबधित शोध आलेख प्रस्तुत किए गए। द्वितीय सत्र में तमिल, गुजराती भाषा समूह से संबंधित शोध आलेख प्रस्तुत किए गए। परिचर्चा सत्र 'भारतीय भाषाओं का भक्ति साहित्य-एकसूत्रता के आयाम' में प्रो. रामेश्वर मिश्र, प्रो. नंदकिशोर पाण्डेय, प्रो. मणिक्याम्बा, प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी द्वारा शोध कर्ताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों का समाधान किया गया। तत्पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम 'विविधता में एकता का अद्भुत संगम' में राई, लेप्चा, भूटिया, नेपाली, लावणी, उड़िया, उज्बेकिस्तान, आदि समूह नृत्य एवं गीत प्रस्तुतियाँ दी गई।

द्वितीय दिवस 20 फरवरी को तृतीय सत्र में बांगला, ओड़िया, सिधी आषा समूह से संबंधित शोध आलेख प्रस्तुत किए गए। चतुर्थ सत्र में मराठी, पंजाबी भाषा समूह से संबंधित शोध आलेख प्रस्तुत किए गए। पंचम सत्र में अवधी, राजस्थानी, मैथिली भाषा समूह से संबंधित शोध आलेख प्रस्तुत किए गए।

परिचर्चा सत्र 'भक्ति साहित्य शोध विषयों की निर्मित संकल्पनाएँ' में प्रो. ललित बिहारी गोस्वामी, प्रो. शकुंतला मिश्र, प्रो. मैथिली राव, प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी द्वारा शोध कर्ताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों का समाधान किया गया, जिसका संचालन डॉ. नृत्य गोपाल द्वारा किया गया। तृतीय दिवस 21 फरवरी को षष्टम सत्र में तेलुगु, कन्नड़, मलयालम भाषा समूह से संबंधित शोध आलेख प्रस्तुत किए गए।

समापन सत्र में प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी, प्रो. ललित बिहारी गोस्वामी, प्रो. रामेश्वर मिश्र, प्रो. सपना गुप्ता, डॉ. मीनाक्षी दुबे, डॉ. नृत्य गोपाल की गरिमामयी उपस्थिति रही। संगोष्ठी में देश के विभिन्न प्रांतों से आए विद्वान्, शैक्षिक समन्वयक, विभागाध्यक्ष, शोधार्थी, स्वदेशी एवं विदेशी विद्यार्थी उपस्थित रहे। राष्ट्रगान द्वारा संगोष्ठी का समापन किया गया।

संरक्षक
प्रो. सुरेन्द्र दुबे

प्रधान संपादक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी

संपादक
डॉ. अपर्णा सारस्वत

संपादन सहायक
शिवानी चौहान

टाइप सेटिंग
योगेन्द्र सिंह राणा

मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स,
गाजियाबाद (उ.प्र.)

संस्थान समाचार में प्रकाशित समाचारों का स्रोत केंद्रीय हिंदी संस्थान के विभिन्न विभागों/केंद्रों से प्राप्त सामग्री है।
संस्थान समाचार के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं।
संस्थान समाचार का ई-मेल:
sansthansamacharkhs2021@gmail.com

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा-282005 द्वारा वितरण हेतु दिल्ली केंद्र से प्रकाशित।